सप्तम अध्याय

11119CH07

गद्यकाव्य एवं चम्पूकाव्य

संस्कृत गद्य का आरम्भ ब्राह्मण-ग्रन्थों और उपनिषदों के गद्य में देखा जा सकता है। बहुत दिनों तक सरल स्वाभाविक शैली में गद्य लिखने की परम्परा चलती रही। प्राचीन शिलालेखों में गद्य का काव्यमय रूप प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन् का गिरिनार शिलालेख (150 ई.) तथा हरिषेण रचित समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (360 ई.) महत्त्वपूर्ण हैं। ये दोनों साहित्यिक गद्य के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। गद्यकाव्य को स्मरण रखने का श्रम, आलोचकों की उपेक्षा और गद्यकाव्य का ऊँचा मानदण्ड—इन तीनों कारणों से गद्यकाव्य की रचना कम हुई। पद्यविधा की सुकुमारता, लयात्मकता, संगीतात्मकता, रचनात्मक सुविधादि गुणों के कारण पद्य रचना द्वारा लोकयश एवं प्रशंसा प्राप्त करना कवियों के लिए सरल कार्य था। परन्तु गद्य रचना में इन गुणों को उत्पन्न करना थोड़ा कठिन था। इसीलिए अधिकांश कवियों की सहज प्रवृत्ति पद्य रचना की ही ओर अधिक रही। गद्य रचना के सन्दर्भ में यह उक्ति भी प्रसिद्ध है—**गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।** गद्य काव्य के मुख्यत: दो भेद हैं— कथा और आख्यायिका। प्राय: छठी-सातवीं शताब्दी ई. में कुछ महत्त्वपूर्ण गद्य कवि हुए, जैसे—*दण्डी, सुबन्धु* और *बाणभट्ट*।

दण्डी

दण्डी ने *दशकुमारचरित* के रूप में एक अद्भुत कथा-काव्य दिया है। दण्डी का समय विवादास्पद है, किन्तु अधिकांश विद्वान् इनका काल छठीं शताब्दी मानते हैं। परम्परा से दण्डी के तीन ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते हैं। इनमें दूसरा ग्रन्थ *काव्यादर्श* और तीसरा *अवन्तिसुन्दरीकथा* है। इस तीसरे ग्रन्थ के रचयिता के विषय में कुछ विवाद है। *दशकुमारचरित* अव्यवस्थित रूप में मिलता है। इसके तीन भाग प्राप्त हैं— पूर्वपीठिका (पाँच उच्छ्वास), मूलभाग (आठ उच्छ्वास) तथा उत्तरपीठिका (एक उच्छ्वास)। मूलभाग में आठ कुमारों की कथा का वर्णन है। पूर्वपीठिका को मिलाकर दस कुमारों की कथा पूरी हो जाती है। तीनों भागों की शैली में थोड़ा भेद दिखाई पड़ता है।

दशकुमारचरित का कथानक घटना प्रधान है, जिसमें अनेक रोमांचक घटनाएँ पाठकों को विस्मय और विषाद के बीच ले जाती हैं। कहीं भयंकर जंगल में घटनाक्रम पहुँचाता है,

© NCERT not to be republished

तो कहीं समुद्र में जहाज टूटने पर कोई तैरता हुआ मिलता है। घटनाएँ और विषय-वर्णन दोनों ही समान रूप से दण्डी के लिए महत्त्व रखते हैं। कथावस्तु कहीं भी वर्णनों के क्रम में अवरूद्ध नहीं होती। दण्डी के चित्रण में सामान्य समाज की प्रधानता है। जिसमें निम्न कोटि का जीवन बिताने वाले धूर्त, जादूगर, चालाक, चोर, तपस्वी, सिंहासनच्युत राजा, पतिवञ्चक नारी, ठगने वाली वेश्याएँ, ब्राह्मण, व्यापारी और साधु। दण्डी का हास्य और व्यंग्य भी उच्च कोटि का है। दण्डी अपने वर्णनों में कहीं सहज और कहीं गम्भीर प्रतीत होते हैं।

दण्डी की सबसे बड़ी विशेषता सरल और व्यावहारिक किन्तु ललित पदों से युक्त गद्य लिखने में है। वे लम्बे समासों, कठोर ध्वनियों और शब्दाडम्बर से दूर रहते हैं। भाषा के प्रयोग में ऐसी स्वाभाविकता किसी अन्य गद्य कवि में नहीं मिलती। दण्डी का पद-लालित्य संस्कृत आलोचकों में विख्यात है— **दण्डिनः पदलालित्यम्।** *दशकुमारचरित* की विषयवस्तु भी किसी आधुनिक रोमांचकारी उपन्यास से कम रोचक नहीं है।

सुबन्धु

बाणभट्ट ने *हर्षचरित* की प्रस्तावना में *वासवदत्ता* को कवियों का दर्पभंग करने वाली रचना कहा है। इसी प्रकार *कादम्बरी* को उन्होंने दो कथाओं (*वासवदत्ता* तथा *बृहत्कथा*) से उत्कृष्ट कहा है। इससे ज्ञात होता है कि सुबन्धु बाण से पहले हो चुके थे। *वासवदत्ता* सुबन्धु की उत्कृष्ट गद्य रचना है, इसमें कथानक बहुत संक्षिप्त है। राजकुमार कन्दर्पकेतु स्वप्न में अपनी भावी प्रियतमा को देखता है और अपने मित्र के साथ उसकी खोज में निकल जाता है। वह विन्ध्यावटी में एक मैना के मुख से वासवदत्ता का वृत्तान्त सुनता है। उधर वासवदत्ता भी स्वप्न में कन्दर्पकेतु को देखकर उसके प्रति प्रेमासक्त हो जाती है। दोनों पाटलिपुत्र में मिलते हैं। प्रेमी-युगल जादू के घोड़े पर चढ़कर भाग जाते हैं और विंध्याचल में पहुँचकर सो जाते हैं। राजकुमार जब जागता है, तब वासवदत्ता को नहीं पाता। बहुत ढूँढ़ने के बाद वह एक प्रतिमा को देखता है। स्पर्श करते ही प्रतिमा वासवदत्ता बन जाती है। बाद में दोनों का विवाह हो जाता है।

इस संक्षिप्त कथानक को विस्तृत वर्णन और कल्पनाशक्ति से सुबन्धु बहुत फैलाते हैं। उनका लक्ष्य रोचक और सरस कथा का आख्यान नहीं है, अपितु वे वर्णन-कौशल से चमत्कार उत्पन्न कर गौरव अर्जित करना चाहते हैं। नायक-नायिका के रूप का वर्णन करने में, उनके गुण-गान में, उनकी तीव्र विरह-वेदना, मिलन की आकांक्षा और संयोग-दशा के चित्रण में सुबन्धु ने पर्याप्त शक्ति लगाई है। इस कार्य में सुबन्धु के व्यापक अनुभव तथा पाण्डित्य ने बड़ी सहायता की है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

सुबन्धु अपने श्लेष के प्रयोग पर बहुत गर्व करते हैं। वे इस कथा के अक्षर-अक्षर में श्लेष भरने का दावा करते हैं। अन्य अलंकारों का भी उन्होंने प्रचुर प्रयोग किया है। यत्र-तत्र पद्यों का प्रयोग करके अपनी शैली को उन्होंने बहुत रोचक बनाया है। *वासवदत्ता* वास्तव में सुबन्धु की शैली का चमत्कार दिखाने का सुन्दर अवसर देती है। लम्बे समासों का प्रयोग तथा अनुप्रासों का अत्यधिक उपयोग सुबन्धु के शैली की विशेषता है। समासों में स्वरमाधुर्य है और अनुप्रासों में संगीत है। अपने युग के अनुरूप उन्होंने चमत्कार-प्रदर्शन किया है।

बाणभट्ट

संस्कृत गद्य साहित्य में सर्वाधिक प्रतिभाशाली गद्यकार बाण ही हैं। इनके विषय में अन्य संस्कृत-कवियों की अपेक्षा अधिक जानकारी प्राप्त होती है। *हर्षचरित* के आरम्भ में इन्होंने अपना और अपने वंश का पूरा विवरण दिया है। ये वात्स्यायन-गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम चित्रभानु था। अल्पावस्था में ही ये अनाथ हो गए थे। किंतु विद्वानों के परिवार में जन्म लेने के कारण इन्होंने सभी विद्याओं का अभ्यास किया था। युवावस्था में अनेक कलाओं और विद्याओं के जानकार मित्रों की मण्डली बनाकर इन्होंने पर्याप्त देशाटन किया था। जब अनेक अनुभवों से सम्पन्न होकर बाण अपने ग्राम प्रीतिकूट (शोण के तट पर) लौटे, तो हर्षवर्धन ने अपने अनुज कृष्ण के द्वारा इन्हें अपनी राजसभा में बुलाया। बाण राजकृपा से हर्ष की सभा में रहने लगे। हर्षवर्द्धन का समय 607 ई. से 648 ई. है। इसलिए बाण का भी यही समय होना चाहिए।

बाण ने दो गद्यकाव्य लिखे— *हर्षचरित* तथा *कादम्बरी*। परम्परा बाणभट्ट को *चण्डीशतक* का भी लेखक मानती है।

- **हर्षचरित**—*हर्षचरित* एक आख्यायिका-काव्य है। गद्यकाव्य के उस भेद को आख्यायिका कहते हैं, जिसमें किसी ऐतिहासिक पुरुष या घटनाओं का वर्णन किया जाता है। *हर्षचरित* आठ उच्छ्वासों में विभक्त है। आरम्भिक ढाई उच्छ्वासों में बाण ने अपने वंश का तथा अपना वृत्तान्त दिया है। राजा हर्षवर्द्धन की पैतृक राजधानी स्थाण्वीश्वर का वर्णन कर वे हर्षवर्द्धन के पूर्वजों का वर्णन करते हैं। इसके बाद राजा प्रभाकरवर्द्धन के पूरे जीवन का विवरण देकर वे राज्यवर्द्धन, हर्षवर्द्धन तथा राज्यश्री इन तीनों भाई-बहन के जन्म का भी रोचक वृत्तान्त देते हैं। पञ्चम उच्छ्वास से इस परिवार के संकटों का आरम्भ होता है। प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु, राज्यश्री का विधवा होना, राज्यवर्द्धन की हत्या, राज्यश्री का विन्ध्याटवी में पलायन, हर्षवर्द्धन द्वारा उसकी रक्षा— ये सभी घटनाएँ क्रमश: वर्णित हैं। दिवाकरमित्र नामक बौद्ध संन्यासी के आश्रम में हर्षवर्द्धन व्रत लेता है कि दिग्विजय के बाद वह बौद्ध हो जाएगा। यहीं *हर्षचरित* का कथानक समाप्त हो जाता है।

Reprint 2026-27

बाण ने हर्ष की प्रारंभिक जीवनी ही लिखी, उसके राज्य संचालन की घटनाओं का उल्लेख नहीं किया है। बाण की भेंट हर्ष से तब हुई थी, जब हर्ष समस्त उत्तर-भारत का सम्राट् था, इसलिए यह समस्या बनी हुई है कि बाण ने हर्ष का पूरा जीवनचरित क्यों नहीं लिखा? उन्होंने हर्षवर्द्धन की विशेषताएँ तो बतलाई हैं, उसके साहसिक कार्यों का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन भी प्रारम्भ में ही किया है, किन्तु उसके राज्यकाल की प्रमुख घटनाओं का क्रमबद्ध रूप से वर्णन नहीं किया। इतिहास का संक्षिप्त रूप यहाँ काव्य के विशाल आवरण से ढक गया है।

हर्षचरित में बाणभट्ट का पाण्डित्य और व्यापक अनुभव प्रकट हुआ है। विस्तृत वर्णन, सजीव संवाद, सुन्दर उपमाएँ, झंकार करती शब्दावली तथा रसों की स्पष्ट अभिव्यक्ति— ये सभी गुण बाण की गद्य-शैली में प्रचुर रूप में प्राप्त होते हैं। राज्यश्री के विवाह-वर्णन में जहाँ आनन्द और उल्लास का सजीव विवरण मिलता है, वहीं प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु मार्मिक रूप से वर्णित है।

- **कादम्बरी**— यह कवि-कल्पित कथानक पर आश्रित होने के कारण कथा नामक गद्यकाव्य है। उच्छ्वास, अध्याय आदि में इसका विभाजन नहीं किया गया है। पूरी कथा का दो-तिहाई भाग ही बाण ने लिखा। इसका एक-तिहाई भाग उनके पुत्र ने लिखकर जोड़ा, जो अपने पिता के अपूर्ण ग्रन्थ से दु:खी था। *कादम्बरी* की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड (नायक) तथा पुण्डरीक (उसका मित्र) के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है। आरम्भ में विदिशा के राजा शूद्रक का वर्णन है। उसकी राजसभा में चाण्डाल कन्या वैशम्पायन नामक एक मेधावी तोते को लेकर आती है। यह तोता राजा को अपने जन्म और जाबालि के आश्रम में अपने पहुँचने का वर्णन सुनाता है। जाबालि ने तोते को उसके पूर्व जन्म की कथा सुनाई थी। तदनुसार राजा चन्द्रापीड और उसके मित्र वैशम्पायन की कथा आती है। चन्द्रापीड दिग्विजय के प्रसंग में हिमालय में जाता है, जहाँ अच्छोद सरोवर के निकट महाश्वेता के अलौकिक संगीत से आकृष्ट होता है। वहाँ कादम्बरी से उसकी भेंट होती है और वह उसके प्रति आसक्त हो जाता है। महाश्वेता एक तपस्वी कुमार पुण्डरीक के साथ अपने अधूरे प्रेम की कहानी सुनाती है। उसी समय चन्द्रापीड अपने पिता तारापीड के द्वारा उज्जैन बुला लिया जाता है, किन्तु वह वियोगजन्य व्यथा से पीड़ित रहता है। पत्रलेखा से कादम्बरी का समाचार सुनकर वह प्रसन्न होता है। यहीं बाण की कादम्बरी समाप्त हो जाती है। महाश्वेता वैशम्पायन को तोता बनने का शाप देती है। यह वैशम्पायन चन्द्रापीड का मित्र है, शाप के बाद वह मर जाता है। इससे चन्द्रापीड

Reprint 2026-27

भी दु:खी होकर मर जाता है। महाश्वेता तथा कादम्बरी, राजकुमार के शरीर की रक्षा करती हैं। अन्त में सभी को जीवन प्राप्त होता है।

कादम्बरी में कथा को ही नहीं, वर्णनों को भी बाण ने अपनी कल्पनाशक्ति से फैलाया है। इसमें सभी स्थल बाण की लोकोत्तर शक्ति तथा वर्णन-क्षमता का परिचय देते हैं। काव्यशास्त्र के सभी उपादानों (रस, अलंकार, गुण एवं रीति) का औचित्यपूर्ण प्रयोग करने के कारण कादम्बरी बाण की उत्कृष्ट गद्य रचना है। इसमें विषय की आवश्यकता के अनुसार वर्णन शैली अपनाई गई है। इसलिए उनकी शैली को **पाञ्चाली** कहा जाता है, जिसमें शब्द और अर्थ का समान गुम्फन होता है। बाण ने पात्रों का सजीव निरूपण किया है, रस का समुचित परिपाक दिखाया है और मानव-जीवन के सभी पक्षों पर दृष्टि रखी है। इसलिए आलोचकों ने एक स्वर से कहा है कि **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।** अर्थात् उनके वर्णन से कुछ भी नहीं बचा है। *कादम्बरी* में मन्त्री शुकनास ने राजकुमार चन्द्रापीड को जो विस्तृत उपदेश दिया है, वह आज भी तरुणों के लिए मार्गदर्शक है।

अम्बिकादत्त व्यास

- **शिवराजविजय**— एक आधुनिक गद्यकाव्य है, जो महान् देशभक्त शिवाजी के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर आधारित आधुनिक उपन्यास की शैली में लिखा गया है। इसके लेखक पं. अम्बिकादत्त व्यास (1858-1900 ई.) हैं। व्यास जी मूलत: जयपुर (राजस्थान) के निवासी थे, किन्तु उनका कार्यक्षेत्र बिहार था। *शिवराजविजय* का कथानक ऐतिहासिक है, जिसमें कवि ने कल्पना का भी प्रचुर प्रयोग किया है। इससे घटनाएँ गतिशील और प्रभावशाली हो गई हैं। व्यास जी की भाषा-शैली में प्रसादगुण, कथा-प्रवाह और कल्पना की विशदता मिलती है। विषयवस्तु की दृष्टि से यह गद्यकाव्य शिवाजी और औरंगजेब के सङ्घर्ष की घटनाओं पर आश्रित है। यशवन्त सिंह, अफजल खाँ आदि कई ऐतिहासिक पात्रों को इसमें चित्रित किया गया है। शिवाजी भारतीय आदर्श, संस्कृति तथा राष्ट्रशक्ति के रक्षक के रूप में दिखाए गए हैं। उनका ऐतिहासिक व्यक्तित्व इस गद्यकाव्य में पूर्णत: चित्रित है। इसमें जहाँ-तहाँ फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। पूरी रचना 12 नि:श्वासों में विभक्त है। यह आधुनिक गद्य साहित्य का गौरव ग्रन्थ है।

अन्य गद्यकाव्य

संस्कृत भाषा में गद्य रचना कम हुई है, फिर भी विभिन्न कालों में कवियों ने अपना कौशल गद्यकाव्य की रचना में दिखाया है। इन सभी में प्राय: बाण के अनुकरण की प्रवृत्ति है।

Reprint 2026-27

धारा नगरी के जैन कवि धनपाल (दसवीं शताब्दी ई.) ने *तिलकमञ्जरी* लिखकर बाण की शैली का अनुकरण किया। वे बाण के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं। आधुनिक काल में पण्डिता क्षमाराव (1890—1954 ई.) का नाम गद्य लेखकों में अग्रणी है। उन्होंने *कथामुक्तावली*, *विचित्रपरिषद्यात्रा* इत्यादि कई गद्यकाव्य लिखे हैं।

ध्यातव्य बिन्दु

- संस्कृत में गद्य का आरम्भ ब्राह्मण तथा उपनिषद् ग्रन्थों से हुआ।
  गद्यकाव्य के महत्त्वपूर्ण कवि—
  दण्डी
  सुबन्धु
  बाणभट्ट
- दण्डी द्वारा विरचित *दशकुमारचरित* कथा-काव्य है। जिसमें दशकुमारों की कथा वर्णित है।

दण्डी की अन्य रचनाएँ—

काव्यादर्श
अवन्तिसुन्दरीकथा

- **सुबन्धु**— सुबन्धु द्वारा रचित *वासवदत्ता* गद्यकाव्य है। इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु और राजकुमारी वासवदत्ता का प्रणय चित्रित है।
- **बाणभट्ट**— गद्य साहित्य में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवि हैं। इनके दो प्रसिद्ध गद्यकाव्य हैं। *हर्षचरित* और *कादम्बरी*।
  कादम्बरी बाणभट्ट की उत्कृष्ट गद्य रचना है।
- **शिवराजविजय**— श्री अम्बिकादत्त व्यास द्वारा रचित *शिवराजविजय* आधुनिक गद्यकाव्य है।
- इनके अतिरिक्त संस्कृत में अनेक गद्यकाव्य हैं—
  धनपाल द्वारा रचित— तिलकमञ्जरी
  क्षमाराव द्वारा रचित— कथामुक्तावली
  सोड्ढल द्वारा रचित— उदयसुन्दरीकथा।

Reprint 2026-27

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. संस्कृत भाषा में गद्यकाव्य की रचनाएँ कम होने के क्या कारण हैं?

प्र. 2. छठी शताब्दी के कुछ महत्त्वपूर्ण गद्य कवियों के नाम लिखिए।

प्र. 3. दण्डी के काव्य की कौन-सी विशेषताएँ प्रसिद्ध हैं?

प्र. 4. *दशकुमारचरित* का लेखक कौन है?

प्र. 5. दण्डी ने अपने काव्य में किन-किन सामान्य चरित्रों के आधार पर समाज का चित्र खींचा है?

प्र. 6. *वासवदत्ता* किसकी रचना है?

प्र. 7. *वासवदत्ता* का कथानक पचास शब्दों में लिखिए।

प्र. 8. बाणभट्ट किस राजा की राजसभा में रहते थे?

प्र. 9. *हर्षचरित* तथा *कादम्बरी* किस लेखक की रचनाएँ हैं?

प्र. 10. आख्यायिका की विशेषताएँ बताइए।

प्र. 11. *हर्षचरित* के नामकरण की सार्थकता बताइए।

प्र. 12. बाण की गद्य-शैली की क्या विशेषता है?

प्र. 13. *कादम्बरी* का नायक कौन है?

प्र. 14. *कादम्बरी* का कथानक पचास शब्दों में लिखिए।

प्र. 15. "बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्" इसका आशय क्या है?

प्र. 16. शिवाजी के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर लिखित संस्कृत में कौन-सा गद्यकाव्य है?

प्र. 17. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) संस्कृत गद्य का आरम्भ.. ग्रन्थों और .... से माना जाता है।

(ख) संस्कृत गद्य साहित्य में सर्वाधिक प्रतिष्ठित और प्रतिभाशाली गद्यकार .... ही हैं।

(ग) बाणभट्ट के पिता का नाम .... था।

(घ) सुबन्धु अपने काव्य में .... अलंकार के प्रयोग पर बहुत गर्व करते थे।

(ङ) *शिवराजविजय* में यत्र-तत्र .... के शब्दों का प्रयोग किया गया है।

प्र.18. गद्य काव्यों और कवियों को मिलाइए—

गद्यकाव्य	**कवि**
दशकुमारचरितम्	पण्डिता क्षमाराव
तिलकमञ्जरी	महाकवि दण्डी
कथामुक्तावली	धनपाल

Reprint 2026-27

चम्पूकाव्य

संस्कृत साहित्य में गद्यकाव्य तथा पद्यकाव्य के अतिरिक्त दोनों के मिश्रण के रूप में चम्पूकाव्य का भी उदय हुआ। यद्यपि यह स्वरूपत: नीति-कथाओं के समान गद्य और पद्य से समन्वित होता है, किन्तु नीति-कथाओं और चम्पू में मौलिक अन्तर है। चम्पू मूलत: एक काव्य है, जिसमें कवि अलङ्करण के सभी साधनों का उपयोग करता है। एक ओर इसमें गद्यकाव्य का सौन्दर्य होता है, तो दूसरी ओर महाकाव्य में पाए जाने वाले श्लोकों के समान अलङ्कृत पद्य भी रहते हैं। बाह्य सौन्दर्य इसमें मुख्य होता है और कवि की कला का चमत्कार रहता है। विषयवस्तु की प्रधानता नहीं रहती। इसका उद्देश्य काव्यगत आनन्द देना है। नीति-कथाओं और लोक-कथाओं के समान चम्पूकाव्य सरल शैली में नहीं लिखे जाते। गद्य और पद्य दोनों का उत्कर्ष इसमें वर्तमान रहता है— **गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते**। चम्पूकाव्य को गद्यकाव्य के समान ही उच्छ्वासों में विभक्त किया जाता है। संस्कृत में समय-समय पर लिखे गए कुछ प्रमुख चम्पूकाव्यों का विवरण इस प्रकार है—

1. नलचम्पू और मदालसाचम्पू

ये दोनों त्रिविक्रमभट्ट द्वारा लिखे गए चम्पूकाव्य हैं। इनका काल दसवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्ध माना जाता है। त्रिविक्रमभट्ट राष्ट्रकूट नरेश इन्द्रराज के संरक्षण में रहते थे। *नलचम्पू* को *दमयन्तीकथा* भी कहते हैं। इसमें नल और दमयन्ती की प्रणय कथा वर्णित है। इसमें सात उच्छ्वास हैं। रचना अपूर्ण प्रतीत होती है, क्योंकि नल द्वारा दमयन्ती के निकट सन्देश ले जाने तक की ही कथा इसमें वर्णित है। *नलचम्पू* सरस तथा प्रसादपूर्ण रचना है। इसमें श्लेष की अधिकता है। त्रिविक्रमभट्ट के श्लेष बहुत सरल और आकर्षक हैं। इन्होंने विरोध और परिसंख्या अलंकारों का भी प्रचुर प्रयोग किया है।

इनकी दूसरी रचना *मदालसाचम्पू* है, जो प्रणय-कथा है। इसमें कुवलयाश्व से मदालसा का प्रेम वर्णित है। कुवलयाश्व से मदालसा का विवाह होता है, किन्तु तुरन्त वियोग भी हो जाता है। अन्त में उसे मदालसा की प्राप्ति होती है। कला की दृष्टि से उत्कृष्टता होने पर भी कथा के विकास और रोचकता की दृष्टि से यह कृति लोकप्रिय रही है।

Reprint 2026-27

2. यशस्तिलकचम्पू

यह जैन कवि सोमप्रभसूरि की रचना है। लेखक का काल दसवीं शताब्दी ई. का उत्तरार्द्ध है। यह ग्रन्थ अत्यन्त विस्तृत है। इसमें आठ उच्छ्वास हैं। जैन सिद्धान्तों को इसमें काव्य-रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस चम्पूकाव्य का नायक राजा यशोधर है। पत्नी की धूर्तता से राजा की मृत्यु होती है। नाना योनियों में जन्म लेकर अन्ततः वह जैन धर्म में दीक्षित होता है। यह कथा गुणभद्र के उत्तरपुराण पर आश्रित है। इसी कथा पर पुष्पदन्त ने *जसहरचरिउ* नामक अपभ्रंशकाव्य तथा वादिराजसूरि ने संस्कृत काव्य *यशोधरचरित* लिखा था। इस कृति द्वारा सोमप्रभसूरि के गहन अध्ययन, प्रगाढ़ पाण्डित्य, भाषा पर स्वच्छन्द प्रभुत्व तथा काव्य के क्षेत्र में अभिनव प्रयोगों की रुचि का पता लगता है। इसके आरम्भिक श्लोकों में कवि ने अनेक पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख किया है।

एक अन्य जैन कवि हरिचन्द्र ने राजकुमार जीवन्धर को चरितनायक बनाकर *जीवन्धरचम्पू* लिखा। इनका काल भी दसवीं शताब्दी ई. है। यह चम्पू 11 लम्बकों में विभक्त है। जैन धर्म के सिद्धान्तों को इसमें सरल भाषा में प्रतिपादित किया गया है।

3. उदयसुन्दरीकथा

यह छः उच्छ्वासों में नागराजकुमारी उदयसुन्दरी तथा प्रतिष्ठान के राजा मलयवाहन के विवाह का वर्णन करने वाला चम्पूकाव्य है। इसके रचयिता का नाम सोड्ढल है। लेखक का समय 1040 ई. के आसपास है। *उदयसुन्दरीकथा* पर बाणभट्ट की शैली का बहुत प्रभाव है। सोड्ढल ने इसकी रचना *हर्षचरित* के आदर्श पर की है।

4. रामायणचम्पू

इसे *चम्पूरामायण* भी कहते हैं। इसे मूलतः राजा भोज ने लिखा, किन्तु उन्होंने केवल सुन्दरकाण्ड तक ही इसकी रचना की। युद्धकाण्ड की रचना लक्ष्मणभट्ट ने की तथा उत्तरकाण्ड की वेंकटराज ने। भोज का काल ग्यारहवीं शताब्दी ई. पूर्वार्द्ध है। इसका आधार वाल्मीकीय रामायण है। कथानक, भाव, भाषा, गुण-दोष इत्यादि सभी पर वाल्मीकि का प्रभाव लक्षित होता है। इसमें भोज ने कई प्रकार की शैलियाँ अपनायी हैं। कहीं वे माघ की शैली में लिखते हैं, कहीं कालिदास की शैली में। भोज शब्दों के संयोजन में पूर्ण निपुण हैं। इस चम्पू में कलापक्ष के साथ मार्मिक स्थलों के भाव-सौंदर्य को भी प्रकट किया गया है। इसमें गद्य भाग कम है, पद्यों की विपुलता है।

Reprint 2026-27

5. भारतचम्पू

इसके लेखक सोलहवीं शताब्दी ई. के कवि अनन्तभट्ट हैं। इसमें *महाभारत* की कथा का 12 स्तबकों में वर्णन किया गया है। वर्णन अत्यन्त प्रांजल है, किन्तु कहीं-कहीं क्लिष्टता भी है। कल्पना की नवीनता और वैदर्भी शैली का प्रयोग इसका वैशिष्ट्य है। यह चम्पू संस्कृत जगत् में बहुत प्रसिद्ध है।

6. अन्य चम्पूकाव्य

संस्कृत में प्राय: 250 चम्पूकाव्य लिखे गए हैं। इनके कथानक *रामायण, महाभारत, भागवतपुराण, शिवपुराण* तथा जैन साहित्य से लिए गए हैं। *नृसिंहचम्पू* नाम से पृथक्-पृथक् कई कवियों ने ग्रन्थ लिखे। केशवभट्ट ने छ: स्तबकों में, दैवज्ञसूरि ने पाँच उच्छ्वासों में तथा संकर्षण ने चार उल्लासों में *नृसिंहचम्पू* की रचना की। शेषश्रीकृष्ण-रचित *पारिजातहरणचम्पू* कृष्णलीला से सम्बद्ध है। नीलकण्ठदीक्षित कृत *नीलकण्ठविजयचम्पू,* वेंकटाध्वरि कृत *विश्वगुणादर्शचम्पू,* कविकर्णपूर-रचित *आनन्दवृन्दावनचम्पू* तथा जीवगोस्वामी कृत *गोपालचम्पू* कुछ प्रसिद्ध चम्पूकाव्य हैं।

बीसवीं शताब्दी ई. के पूर्वार्द्ध में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् म. म. हरिहरकृपालु द्विवेदी के जीवन को आधार बनाकर रघुनन्दन त्रिपाठी ने *हरिहरचरितचम्पू* तथा उत्तरार्ध में पण्डित जयकृष्ण मिश्र ने भारत की स्वतन्त्रता पर आधारित संस्कृत का बृहत्तम चम्पू *मातृमुक्तिमुक्तावली* की रचना की।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

ध्यातव्य बिन्दु

- चम्पूकाव्य गद्य और पद्य का मिश्रण है।
- दो प्रमुख चम्पूकाव्य— *नलचम्पू* एवं *मदालसाचम्पू* के रचयिता त्रिविक्रमभट्ट हैं।
- जैन कवि सोमप्रभसूरि द्वारा रचित *यशस्तिलकचम्पू* जैन सिद्धान्तों को काव्यरूप में प्रस्तुत करता है।
- अन्य जैन कवि हरिचन्द्र ने राजकुमार जीवन्धर को नायक बनाकर *जीवन्धरचम्पू* लिखा।
- सोड्ढल रचित *उदयसुन्दरीकथा* में नागराजकुमारी उदयसुन्दरी तथा प्रतिष्ठान के राजा मलयवाहन के विवाह का वर्णन है।
- *रामायणचम्पू* को *चम्पूरामायण* भी कहते हैं जिसके सुन्दरकाण्ड तक की रचना राजा भोज ने युद्धकाण्ड की रचना लक्ष्मणभट्ट ने तथा उत्तरकाण्ड की रचना वेंकटराज ने की।
- अनन्तभट्ट ने *महाभारत* की कथा के आधार पर *भारतचम्पू* की रचना की है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. चम्पूकाव्य किसे कहते हैं?
प्र. 2. नीतिकथा और चम्पू में क्या अन्तर है?
प्र. 3. चम्पूकाव्यों का क्या उद्देश्य है?
प्र. 4. त्रिविक्रमभट्ट के द्वारा लिखे गए दो चम्पूकाव्यों के नाम लिखिए।
प्र. 5. कवि त्रिविक्रमभट्ट किस नरेश के संरक्षण में रहते थे?
प्र. 6. दमयन्तीकथा का दूसरा नाम क्या है?
प्र. 7. *नलचम्पूकाव्य* की विशेषताएँ लिखिए।
प्र. 8. *मदालसाचम्पू* में किसके प्रेम का वर्णन है?
प्र. 9. *यशस्तिलकचम्पू* का लेखक कौन है?
प्र. 10. *जीवन्धरचम्पू* के लेखक कौन थे? वे किस शताब्दी में हुए?
प्र. 11. सोड्ढल की रचना पर किस कवि की शैली का प्रभाव पड़ा है?
प्र. 12. भोज ने अपने चम्पू में किन-किन कवियों की शैली अपनाई है?
प्र. 13. *महाभारत* की कथा के आधार पर लिखित प्रसिद्ध चम्पू का नाम लिखिए।
प्र. 14. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) *यशस्तिलकचम्पू* में .... धर्म के सिद्धान्तों का वर्णन है।
(ख) *यशस्तिलकचम्पू* का नायक .... है।
(ग) सोड्ढल की रचना का नाम .... है।
(घ) राजा भोज ने .... चम्पू की रचना की।
(ङ) *भारतचम्पू* के लेखक .... हैं।

प्र. 15. चम्पू और लेखक के नामों को मिलाइए—

क	**ख**
पारिजातहरणचम्पू	जीवगोस्वामी
आनन्दवृन्दावनचम्पू	कविकर्णपूर
गोपालचम्पू	दैवज्ञसूरि
विश्वगुणादर्शचम्पू	शेषश्रीकृष्ण
नृसिंहचम्पू	वेंकटाध्वरि

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27